उसके लेनेके लिये मारकर यह मकर करता है. इससे यहां मरना उचित है; पर ससार में बदनामी लेनी खूब नहीं.

यह कह, तालाब में नहा, देवीके सान्हने आ, हाथ जोड़ प्रणाम कर, खांड़ा उठा गले में मारा कि रुण्ड से मुण्ड जुदा हो गया. और यह यहां अकेली खड़ी खड़ी उक्ताकर, राह देख देख निरास हो, ढूंढती ऊई देवी के मंदिर में गई. वहां जाके देखती क्या है कि दोनों मुए पड़े हैं. फिर इन दोनों को मुआ देख उनने अपने जी में बिचारा लोग तो यह न जानेंगे कि आप से देवी को ये बल चढ़े हैं. सब कहेंगे कि रांड नष्ट थी; बदकारी करने के लिये दोनों को मार आई है. इस बदनामी से मरना उचित है.

यह सोचकर, सरोवर में गोत: मार, देवी के सनमुख आ, सिर नवां दंडवत कर, तलवार उठा चाहे गरदन में मारे कि देवी ने, सिंहासन से उतर, उसका हाथ आनके पकड़ा; और कहा पुची! बर मांग, मैं तुझ से प्रसन्न ऊई. तब उन्ने कहा माता! जो तू मुझ से खुश ऊई है तो इन दोनों को जी दान दे. फिर देवी ने कहा इनके धड़ों से सिर लगा दे. इनने, मारे खुशी के घबराहट से, सिर बदल के लगा दिये. और देवीने अमृत ला छिड़क दिया. ये दोनों जीकर उठ खड़े ऊये; और आपस में झगड़ने लगे. यह कहे स्त्री मेरी; और वह कहे स्त्री मेरी.

इतनी कथा कह, बैताल बोला कि ऐ राजा बीर

बिक्रमाजीत! इन दोनों में वह स्त्री किसकी ऊई. राजाने कहा सुन शास्त्र में इसका प्रमाण लिखता है; कि नदियों में गंगा उत्तम है, और परबतों में सुमेर(१) पर्वतश्रेष्ठ है, और बरछों में कलपवृक्ष,(२) अंगों में मस्तक उत्तम है. इस न्याव से जिसका उत्तम अंग है उसी की स्त्री ऊई. इतनी बात सुन, बैताल फिर उसी दरख़्त में जा लटका. और राजा भी जा उसे बांध कांधे पर रख कर ले चला.

सातवीं कहानी.

बैताल बोला कि ऐ राजा! चंपापुर नाम एक नगर है. वहां का राजा चंपकेश्वर. और रानी का नाम सुलोचना. और बेटी का नाम त्रिभूबनसुंदरी.(३) सो अति सुंदरी है. जिस का मुख चंद्रमा सा; बाल घटा से; आंखें मृगकी सी; भवें धनुष सी; नाक कीरकी सी; गला कपोत का सा; दांत अनार के से दाने; होंठों की लाली कंदूरी की सी; कमर चीते की सी; हाथ पांव कोमल कंवल से; रंग चंपेका सा. गरज, उसके जोबन की जोत दिन बदिन बढ़ती थी.

जब वह ब्याहन योग ऊई तो राजा रानी अपने चित में चिंता करने लगे. और देस देस के राजाओं को यह

(१) सुमेरु. (२) कल्पवृक्ष. (३) त्रिभुवनसुन्दरी.

ख़बर गई कि राजा चंपकेश्वर के घर में ऐसी कन्या पैदा ऊई है कि जिसके रूप को देखतेही सुर, नर, मुनि मोहित हो रहते हैं. फिर मुल्क मुल्क के सब राजाओंने, अपनी अपनी मूरतें लिखवा लिखवा, ब्राह्मणों के हाथ, राजा चंपकेश्वरके यहां भेजियां. राजा ने ले अपनी बेटीको सब राजाओं की तस्वीरें दिखाईं. पर उसके मन में कोई न समाई. तब तो राजा ने कहा तू स्वयंवर कर. वह बात भी उन्ने न मानी; और अपने बाप से कहा रूप, बल, ज्ञान, जिस में ये तीनों गुण होंगे पिता उसे मुझे देना.

गरज, जब कितने एक दिन बीते, तो चारों देससे चार बर आये. फिर उन से राजा ने कहा अपना अपना गुण बिद्या मेरे आगे ज़ाहिर कर कहो. उनमें से, एक बोला मुझमें यह बिद्या है कि एक पकड़ा मैं बनाकर पांच लश्कर को बेचता हूं जब उसका मोल मेरे हाथ आता है, तब उस में से एक लश्कर ब्राह्मण को देता हूं; दूसरा देवताको चढ़ाता हूं; तीसरा अपने अंग लगाता हूं; चौथा स्त्री के वास्ते रखता हूं; पांचवें को बेचकर, रुपये ले, नित भोजन करता हूं. यह बिद्या दूसरा कोई नहीं जानता. और मेरा जो रूप है सो ज़ाहिर है. दूसरा बोला मैं जल थल के पशु पंछी की भाषा जानता हूं. मेरे बल का दूसरा नहीं. और सुन्दरताई मेरी आप के आगे है. तीसरे ने कहा मैं ऐसा शास्त्र समझता हूं कि मेरे समान दूसरा नहीं. और खूबसूरती मेरी तुम्हारे रूबरू है. चौथे ने कहा मैं शस्त्र बिद्या में एकही हूं. दूसरा मुझसा नहीं.

शब्दबेधी तीर मारता हूं. और मेरा ऊस जग में रोशन है; आप भी देखतेही हैं.

यह चारों की बात सुन, राजा अपने जी में चिन्ता करने लगा कि चारों गुण में बराबर हैं; किसे कन्या दूं. यह सोचकर, उसने बेटी के पास जा, चारों का गुण बयान किया; और कहा मैं तुझे किसे दूं? यह सुन के, वह लाज की मारी, नीची गरदन कर, चुप हो रही; और कुछ जवाब न दिया.

इतनी बात कह, बैताल बोला ऐ राजा बिक्रम! यह स्त्री किस के योग है? राजा ने कहा जो कपड़ा बनाकर बेचता है, सो ज़ात का सूद्र है, और जो भाषा जानता है, वह ज़ात का बैस है. जो शास्त्र पढ़ा है, सो ब्राह्मण है. और शब्दबेधी उस का सजाती है. यह स्त्री उसके लाइक़ है. इतनी बात सुन, बैताल फिर उसी पेड़ में जा लटका. और राजा भी, वहां जा उसे बांध, कांधे पर रखकर ले चला.

आठवीं कहानी

तब बैताल ने कहा ऐ राजा! मिथलावती(१) नाम एक नगरी है. वहां का राजा गुणाधिप. उसकी सेवा करने को, दूर देस से एक चिरमदेव नाम राजपुत्र आया. रोज़ उस राजा के दरशन को जाया करता. लेकिन मुलाक़ात

(१) मिथिला.